ੴ ਸਤਿਗੁਰ ਪ੍ਰਸਾਦਿ ॥

शहीद गुरबख्श सिंह निहंग

सिक्ख इतिहास, भाग-दूसरा

लेखक : स. जसबीर सिंह
क्रांतिकारी जगत गुरू नानक देव चैरिटेबल ट्रस्ट, चण्डीगढ़

Websie:www.sikhworld.info
or
Websie:www.sikhhistory.in

नोट : यहां दी गई सारी जानकारी लेखक के अपने निजी विचार हैं। यह जरूरी नहीं कि सभी लेखक के विचारों से सहमत हों।

शहीद गुरबख्श सिंह निहंग

सरदार गुरबख्श सिंह जी का जन्म खेमकरण के निकट गाँव सील में हुआ । बाल्यकाल में ही मातापिता द्वारा दी गई शिक्षा अनुसार आप जी सिक्ख धर्म की मर्यादाओं अनुसार जीवन व्यतीत करने लग गये । जब आप युवा हुए तो आपने भाई मनी सिंह जी की छत्रछाया में अमृतपान किया । आपका निवास लाहौर नगर के निकट था । अत: आपको स्थानीय प्रशासन द्वारा सिक्खों के विरूद्ध अभियानों में कई बार कष्ट उठाने पड़े । आप जी बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी थे । अत: आपएक अच्छे सिक्ख प्रचारकों में गिने जाते थे । आप जी जहाँ विद्वान थे, वहीं युद्धकला में भी निपुण और कई प्रकार के अस्त्र-शस्त्र तथा घुड़सवारी करने में कुशल थे । आपको छोटे घल्लुघारों और बड़े घल्लुघारों में भी भाग लेने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ परन्तु आपको दल खालसा के अध्यक्ष सरदार जस्सा सिंह जी ने आनन्दपुर साहब में स्थिर रहकर सिक्खी प्रचार करने का कार्य सौंपा । जब आपको ज्ञात हुआ कि अहमदशाह अब्दाली ने श्री दरबार साहब की इमारत ध्वस्त कर दी है तो आपको बहुत खेद हुआ । आपने इच्छा प्रकट की कि मुझे वहाँ पर गुरूधामों की रक्षा हेतु प्राणों की बलि देनी चाहिए ।

इसी बीच सिक्खों ने अब्दाली को पराजित करके काबुल लौटने पर विवश कर दिया और सन् 1769 की वैशाखी को श्री हरि मन्दिर साहब के भवन को पुर्ननिर्माण हेतु प्रस्ताव पारित कर के 24 लाख रूपये एकत्रित करके कार सेवा (निष्काम भवन निर्माण कार्य) प्रारम्भ कर दिया । यह शुभ समाचार सुनकर सरदार गुरबख्श सिंह जी हर्ष में आ गये । वह श्री दरबार साहब के दर्शन दीदार करना चाहते थे और उनके हृदय में यही एक अभिलाषा थी कि किसी भी विधि से वही पुराना वैभव पुन: स्थापित हो जाये । परन्तु प्रकृति को कुछ और ही मंजूर था । जब सरदार गुरबख्श सिंह निहंग जी कार सेवा में अपने जत्थे सहित व्यस्त थे तभी अब्दाली के सातवें आक्रमण की सूचना मिली । अत: तभी नव निर्माण कार्य रोक दिया गया और जनसाधारण संगत रूप में आये श्रद्धालु घरों को लौट गये । इस पर सरदार गुरबख्श सिंह निहंग को शहीद होने का चाव चढ़ गया । मानों उन्हें मुँहमाँगी मुराद मिल रही हो । उन्होंने अपने जत्थे को श्री दरबार साहब की सुरक्षा हेतु शहीद होने की प्रतिज्ञा करवाई और

स्वयँ केसरी बाणा (पोशाक) पहन कर तैयार हो गये और घात लगाकर बैठ गये । जैसे ही अब्दाली के सैनिक परिक्रमा में घुसे, सिंह जी अपने जत्थे सहित जयघोष करते हुए उन पर टूट पड़े और घमासान का युद्ध किया ।

प्रत्यक्षदर्शी काज़ी नूर दीन इस काण्ड को अपने शब्दों में इस प्रकार वर्णन करता है –

'जब बादशाह और लश्कर गुरू चक्क बाद (अमृतसर) में पहुँचा तो काई काफिर (विधर्मी; अर्थात सिक्ख, वहाँ दिखाई न पड़े किन्तु थोड़े से आदमी डोटे खिले (अकाल बुंग) में छिपे हुए थे, हमें देखते ही यकायक बाहर निकल आये । शायद इन्होंने गुरू के नाम पर अपना खून बहाने की शपथ ले रखी थी । वे देखते ही देखते लश्कर पर टूट पड़े । वे अभय थे, उन्हें किसी मौत–वोत का डर था ही नहीं, वे गाजियों के साथ जूझते हुए मारे गये । उनकी कुल गिनती तीस थी ।'

अब्दाली द्वारा जहाद के नाम पर जनता को लूटना

अमृतसर में तीस सिक्खों को शहीद करके अहमदशाह लाहौर नगर वापिस लौट गया और कुछ दिन बाद वह नजीबउद्दौला की सहायता करने का बहाना बना कर बटाला की तरफ से दिल्ली की तरफ बढ़ने लगा । वास्तव में वह भाड़े के सैनिकों को काफिरों को मारने और उन्हें लूटने का एक अवसर देकर खुश करना चाहता था ताकि वे अपनी शक्ति का प्रदर्शन निहत्थी जनता पर करके बहादुर गाजी कहलवाएं । अब्दाली ने अपनी यात्रा की गति बहुत धीमी कर दी जिससे जहादी जनता को नि:संकोच लूट सकें । दुर्रानी सेना की इस पाशविक लूट के कारण जनसाधारण गाँव देहात छोड़कर भाग गये । समस्त क्षेत्र विरक्त हो गया। उन्हीं दिनों इस लूट के कारण यह लोक कहावत प्रसिद्ध हो गई –

खादा पीता लाहे दा, रहिंदा अहमद शाहे दा ।

कई दिनों की लूट के बाद अब्दाली होशियारपुर किले में प्रवेश हुआ । वहाँ भी उसने अत्याचारों का बाज़ार गर्म रखा और उसके पश्चात् वह दिल्ली की तरफ रवाना हुआ परन्तु उसे रास्ते में समाचार मिला कि नजीबउद्दौला को सरकार का कोई खतरा नहीं रहा क्योंकि नजीबउद्दौला और जवाहर सिंह की संधि हो गई है । इस पर उसने दल्ली जाने का कार्यक्रम रद्द कर दिया और वापिस लाहौर लौट पड़ा । उसे रास्ते में सरहिन्द उजड़ा हुआ

सुनसान शहर दिखाई दिया । अब उस नगर पर बाबा आला सिंह जी का अधिकार था । वह महसूस करने लगा कि सरहिन्द का प्रबन्ध सिक्खों के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं कर सकता । अत: उसने बाबा आला सिंह जी को आमन्त्रित करके उन्हें अपनी ओर से राजकीय चिन्हों के रूप में एक नगाड़ा, झंडा इत्यादि वस्तुएं सौंप दी और उन्हें अफगानिस्तान के बादशाह की रईयात बना लिया । इसी प्रकार वह सभी सिक्ख जत्थेदारों को अपने राज्यपाल अथवा फौजदार नियुक्त करके अपनी प्रजा घोषित करने की नई नीति लेकर लाहौर चल पड़ा परन्तु सुलतान उल कौम की उपाधि से सम्मानित सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया तथा अन्यसिक्ख सरदारों का मानना था कि पंथ को राज्य तो गुरू ने ही वरदान स्वरूप दे रखा है फिर खालसा पंथ किसी साँसारिक अन्य मनुष्यों की गुलामी क्यों करें ।

दिल्ली से लौटने पर सरदार जस्सा सिंह तथा अन्य सरदारों ने गुरमता किया । इसमें निर्णय लिया गया कि अहमदशाह अब्दाली बार बार क्यों आक्रमण करके हमें परेशान करता है, इस बार उससे दो दो हाथ कर ही लिये जायें । अत: उन्होंने फिल्लौर तथा तलबन नौका स्थानों को रोक लिया और अब्दाली की प्रतीक्षा करने लगे । अब्दाली सिक्खों की नीतियों और उनकी चालों को भली भान्ति समझ चुका था । अत: उसने रोपड़ के नौक स्थल (पतन) से चुपचाप सतलुज नदी पार कर ली । अब वह दोआबा में पहुँच चुका था । अभी वह थोड़ी दूर ही गया था कि खालसा दल ने आकर उसका मार्ग रोक लिया और अब्दाली को लड़ाई के लिए ललकारा । जब अहमदशाह अब्दाली को सिक्खों की इस तैयारी का अभ्यास हुआ तो उसने अपने सिपाहियों को दीन (धर्म) के नाम क लड़ाई लड़ने की चुनौती दी और कहा – गाजियों इन काफिरों को सदा की नींद सुला दो ।

दल खालसा का अध्यक्ष, शिरोमणि नेता सरदार जस्सा सिंह सेना के मध्य में हो गया । उनकी दाहिनी ओर चढ़त सिंह, झंडा सिंह, लहिना सिंह भंगी तथा जयसिंह कन्हैया । इनके मुकाबले में शत्रु पक्ष की तरफ से बलोच नसीर खान खड़ा था । सरदार जस्सा सिंह की बांई तरफ हरी सिंह, रामदास, गुलाब सिंह तथा गुलजार सिंह भंगी थे । जिनके मुकाबले में शत्रु पक्ष के शाह वली खान, जहान खान इत्यादि थे । दोनों पक्षों में घमासान युद्ध हुआ किन्तु संध्या तक हार जीत का फैसला नहीं हो सका ।

काज़ी नूर मुहम्मद ने इस युद्ध के दृश्यों को लिखते समय दुर्रानियों और बलोचों का खूब यशोगान किया है । वास्तव में वह काफिर और गाजियों में हुए युद्ध में गाजियों के शौर्य का वृतान्त लिखने के उद्देश्य से ही मीर नसीर खान के साथ इस अभियान का प्रत्यक्षदर्शी बन कर आया था । उसका पक्षपात करना स्वाभाविक भी था किन्तु सिक्खों की वीरता ने भी उसके मन पर गहरा प्रभाव डाला, जिसे लक्ष्य करके काजी ने अपने 'जंगनामा' का पूरा एक अध्याय उन्हें ही समर्पित किया है । जिसका आगे वर्णन होगा ।

दूसरे दिन सूर्योदय के साथ ही लड़ाई फिर आरम्भ हो गई । इस बार सिक्खों ने अपनी सेनाओं की दिशाएं बदल दी थी । दांई ओर वाली बाएं तरफ और बांई वाली को दाहिनी तरफ कर दिया था, इसी प्रकार आगे वाले सैनिक पीछे कर दिये गये थे । भले ही दूसरे दिन कोई ठोस निर्णय नहीं हो पाया, फिर भी सिक्खों का पलड़ा भारी ही रहा ।

तीसरे दिन के यद्ध की रूपरेखा पिछले दिनों जैसी ही थी । सुबह होते ही अहमदशाह अब्दाली अभी अपने शिविर से पाँच कोस आगे बढ़ा ही था कि सिक्खों ने हमला करके उसका रास्ता रोक लिया । सारा दिन झड़पें होती रही, जिससे अब्दाली बड़ा परेशान हुआ । पिछले दिनों की भान्ति वे अंधेरा होने पर अपने अपने शिविरों को लौट गये । चौथे, पाँचवे और छठे दिन भी यही हाल रहा, काज़ी नूरमुहम्मद ने इन तीन दिनों का विवरण प्रस्तुत नहीं किया । शायद वह अपने गाजियों की पराजय का दृश्य चित्रण ही नहीं करना चाहता था परन्तु उसने व्यास नदी की दक्षिण दिशा से सिक्खों द्वारा किये गये सातवें दिन के आक्रमण का विवरण अवश्य ही दिया है ।

काजी साहब के जंगनामा के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि सरदार जस्सा सिंह आहलूवालिया के नेतृत्त्व में सतलुज तथा व्यास नदी के मध्यवर्ती क्षेत्रों में सिक्खों ने अब्दाली को इस कदर छकाया कि उसे क्षण भर को भी सुख की साँस नहीं लेने दी ।

जो मुस्लिमधर्मी योद्धा (गाजी) सिक्खों के विरूद्ध धर्म युद्ध (जहाद) करने आये थे, वे डींग हाँका करते थे कि हम सिक्खों का सर्वनाश कर देंगे, इनकी स्त्रियाँ और बच्चों को बन्दी बना लेंगे और इन्हें रूई की भान्ति धुन डालेंगे किन्तु वही गाजी अब इतना घबरा गये

कि काजी नूर मुहम्मद को भी लिखना पड़ा कि यदि सिक्खों की फौज में भगदड़ मच जाये तो उसे भगदड़ न समझों । यह भी सिक्खों की युद्ध नीति के दांव पेंच ही होते हैं । इनसे बचो, जो दोबारा बचो । वहीं अब्दाली जो यह कहता था कि सिक्ख कहीं दिखाई ही नहीं पड़ते, जब वे उसका मार्ग अवरूद्ध करने लगे तो वह स्वयं छोटे बड़े सैनिक अधिकारियों तथा गाजियों के पास जा जा कर कहने लगा कि देखना कहीं सिक्खों का पीछा ना कर बैठना । तुम लोग अपनी चाल चलते हुए आगे बढ़ते रहो और किसी विधि से इनके चंगुल से निकल कर अगली नदी पार कर लो नहीं तो यहीं सभी का कब्रिस्तान न बन जाएं । अब्दाली ने बलोच नेता मीर नसीर खान को विशेष रूप से निवेदन किया कि यदि सिक्ख सामने कहीं दिखाई पड़ भी जाएं तो भी उन पर आक्रमण न करना । मैं तो इनकी निडरता और वीरता को देखकर चकित हो गया हूँ ।

अब्दाली ने बहुत कठिनाई में व्यास नदी पार कर ली और उसने खुदा का शुक्र मनाया । वह इस बार लाहौर नहीं ठहरा, उसे शक था कि कहीं सिक्ख उस पर फिर से धावा न बोल दे । वह मार्च, 1765 ईस्वी में चनाब नदी को पार करने का प्रयत्न करने लगा । छः नाले तो ठीक से पार हो गये परन्तु अन्तिम दो नालों में बर्फ गलने से पानी बहुत तीव्र गति पर था । अतः उसका उनमें जानी तथा माली नुक्सान हो गया । लेहलम नदी को पार करके रोहतास के पड़ाव से मीर नाज़र खान तो बलोचिस्तान को चला गया और अहमदशाह खाली हाथ अफगानिस्तान पहुँच गया ।

समाप्त